।। ओ३म् ।।

प्राचीन भारतीय विद्यासभा गुरुकुल आश्रम परिचालना समिति (पंजीकृत) द्वारा संचालित

महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना एवं आदर्श कन्या गुरुकुल आश्रम आमसेना की

।। प्रवेश नियमावली ।।

महाविद्यालय गुरुकुल आमसेना

आदर्श कन्या गुरुकुल आमसेना

गुरुकुल आमसेना अल्प समय में ही अपनी विशेषताओं के कारण देश, विदेश में आशाओं का केन्द्र बन गया है।

गुरुकुल आश्रम आमसेना

खरियार रोड, जि.- नुआपड़ा (ओडिशा) 766109

सम्पर्क सूत्र : 9437070615,8280283034, 7873111213

www.Vedicgurukulamsena.com, **Email**- gurukulamsena11@gmail.com

गुरुकुल का उद्देश्य

- प्राचीन आश्रम प्रणाली से वेद शास्त्रों की शिक्षा देते हुए बच्चों के सच्चरित्रवान् बनाना और उनके हृदय में ऐसी भावना भरना कि वे देश-धर्म और आर्यसमाज के लिए अपना जीवन तक न्यौछावर कर सकें।
- बच्चों का आत्मिक, बौद्धिक व शारीरिक विकास करते हुए प्रत्येक कार्य की क्रियात्मक शिक्षा देकर उन्हें स्वावलम्बी बनाना।
- वैदिक धर्म के लिये आदर्श अध्यापक, उपदेशक, त्यागी, तपस्वी, कर्मठ, विद्वान् व योग्य नागरिक तैयार करना। अशिक्षित वनवासी क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति की रक्षा व प्रचार-प्रसार करना। प्राचीन वैदिक शास्त्रों और सत्साहित्या का प्रकाशन करना।
- आर्य वीर दल, आर्य वीरांगना, क्रियात्मक योग, होम्योपैथिक चिकित्सा शिविर आदि के माध्यम से भारतीय संस्कृति की रक्षा करना तथा योग्य युवक तैयार करना।
- यहां की शिक्षा अल्पकाल में विद्वान् बनाने वाली है आज भारत में अनेक गुरुकुल चल रहे हैं, जो ऋषि मुनियों की संस्कृति के रक्षक हैं।
- विद्यार्थियों को निश्चित विद्यालयीय पाठ्यक्रम के साथ-साथ विद्यार्थी वेद, उपनिषद् ,दर्शन, गीता, पाणिनीय अष्टाध्यायी, नीतिशतक, वैराग्यशतक, चाणक्यनीति, विदुरनीति आदि अनेक प्राचीन ग्रंथों को कंठस्थ भी करते हैं और उनका गम्भीर अध्ययन भी करते हैं।
- इससे उनके व्यक्तित्व में आधुनिक के साथ-साथ प्राचीन विद्या का भी एक महत्वपूर्ण आयाम जुड़ जाता है. जीवन भर साथ रहने वाली यह उपलब्धि उन्हें बाकी विद्यार्थियों से अलग बनाती है.
- उन्हें अपनी संस्कृति और सभ्यता का ठोस ज्ञान मिल जाता है. जिससे यहां से पढ़कर जाने के बाद अपने-अपने कार्यक्षेत्र में उनकी उत्तम छवि बन जाती है. ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता और अनुशासनपूर्वक अपने कार्य को करते हुए वे देश के अच्छे नागरिक बनते हैं और ये एक बड्डी उपलब्धि है।

गुरुकुल क्या है ?

- **गुरुकुल आमसेना भारतीय संस्कृति एवं आर्ष विद्या की संगमभूमि है।**
- **गुरुकुल आमसेना ज्ञान, बह्मचर्य की तपस्थली है।**
- **गुरुकुल आमसेना शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास के इच्छुक छात्र-छात्राओं की साधनाभूमि है।**
- **ऋषि परंपरा की धरोहर है ।**
- **जहाँ विद्यार्थी आश्रम मे गुरु के साथ रहकर विद्याध्ययन करते थे। इसी का नाम गुरुकुल है।**

शुल्क व्यवस्था

प्रवेश आवेदन शुल्क–	50
प्रवेश शुल्क–	1000
कम्प्यूटर शुल्क–	1000
वस्त्र, पुस्तक–	2500
परीक्षा शुल्क–	700 (9वीं से उपर)
मासिक शुल्क– भोजन	1000 X 6 इसी तरह 1000 X 6 महीने का जमा करेंगे
अन्य खर्च–	1000
म्यूजिक –	200

कुल शुल्क 12750 रु. प्रवेश के समय ही जमा कराना होगा।

शैक्षणिक व्यवस्था–

छठवीं से आठवीं तक जगन्नाथ विश्वविद्यालय पुरी द्वारा मान्यता प्राप्त की (NCERT) की पुस्तकें एवं संस्कृत।

नवमीं से एम. ए. पर्यन्त (आचार्य) महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक हरियाणा से मान्यता प्राप्त ।

नोट – संस्कृत के साथ साथ Math, English, Science, History, Geography आदि सभी (NCERT) की पुस्तकें ।

आवश्यक निर्देश: अभिभावकों के लिए–

1. अध्ययनकाल में मोबाईल अपने बच्चों को रखने के लिए न दें ।
2. नशे का सेवन पूर्णत: वर्जित है अत: प्रवेश समय पूर्व सूचित करें, किसी प्रकार की बिमारी हो तो भी बतावें ।
3. प्रवेश के 1 महीने बाद ही आप बच्चों से मिल पायेंगे एवं महीने के अन्तिम रविवार को ही बच्चे से फोन पर बात कर पायेंगे. समय– 2 से 4 ।
4. विशेष परिस्थिति को छोड़कर वर्ष में एक बार ही 7 से 10 दिन का अवकाश दिया जायेगा। ग्रीष्म कालीन अवकाश नहीं होता है ।
5. प्रवेश हो जाने पर जमा की गई राशि वापस नहीं मिलेगी ।
6. अवकाश हेतु प्रधान अध्यापक से ही सम्पर्क करें अन्य किसी से नहीं ।
7. कन्याओं से मिलने का समय शनिवार को 12 से 5 बजे तक होगा। वही व्यक्ति कन्या से मिल पाएगा जिसका फोटो फार्म मे लगा होगा।
8. छात्रों से 8280283034 पर तथा छात्राओं से 9937498084 पर बात होगी।
9. जो बुद्धिमान छात्र नि:शुल्क शिक्षा लेंगे उसको शास्त्री पर्यन्त पढ़ना अनिवार्य होग।

–: आवश्यक सामान :–

1. 2 आधार कार्ड की फोटो कापी, पिछली कक्षा का अंक पत्र की फोटो कापी, बच्चे की 6 पासपोर्ट साईज फोटो, जन्म प्रमाण पत्र, फैमली की फोटो, राशन कार्ड की 2 फोटो कोपी, टी. सी. ।

2. बिस्तर, गद्दा, चादर– (ओढने और विछाने की), 1 पेटी, बाल्टी, चटाई, 1 थाली, 1 डब्बा (कमण्डल) सभी पात्रों में नाम लिखे हों ।

3. पाठ्य सामग्री– स्कूल बैग, ड्राइंग नोट बुक, कम्पास बक्स, छठवीं कक्षा से दशवीं तक ।

अन्य सामान– साबुन, सर्फ, नेल कटर, तेलादि ।

-: गुरुकुलीय दिनचर्या व व्यक्तित्व निर्माण:-

विद्यार्थियों का ध्यान अध्ययन पर ही केन्द्रित रखने के लिए प्राचीन काल में भारत में एक विशेष परम्परा रही और वह थी- विद्या अर्जन करने वालों की दिनचर्या व उनके निवासस्थान का गृहस्थियों से अलग प्रकार का होना। इसके लिए विद्यार्थी का अध्ययन काल में गुरुकुल में रहना अति अनिवार्य था. फिर चाहे वह झोपडी में रहने वाले साधारण परिवार के बालक बालिकाएं हों या महलों के राजकुमार। सभी को शिक्षाप्राप्ति गुरुकुल में जाकर करनी होती थी. जहां सुबह से शाम तक उन्हें एक सी दिनचर्या का पालन करना होता था जो उन्हें तपपूर्वक शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक तीनों क्षेत्रों में सशक्त बनाए. इसी दिनचर्या में बंधे हुए वे विद्याभ्यास करते थे. इस प्रकार से उन विद्यार्थियों को दो अनिवार्य अभ्यासों का अनुपालन करना होता था- एक व्रताभ्यास और दूसरा विद्याभ्यास। जिसमें व्रताभ्यास के अन्तर्गत विनय, शील, संस्कार एवं धर्माचरण के प्रशिक्षण पर बल दिया जाता था, जबकि विद्याभ्यास को हम आज की स्कूली शिक्षा व्यवस्था की तरह ही समझ सकते हैं, जिसमें विषयगत अध्ययन पर ध्यान केंद्रित होता है और महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि व्रत और विद्या दोनों ही क्षेत्रों में विद्यार्थियों का उत्तीर्ण होना आवश्यक था. किसी एक में अपेक्षित परिणाम न दे पाने पर विद्यार्थी को फिर से वही शिक्षा दी जाती थी. जिससे उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थी अच्छे मनुष्य और अच्छे विषयविशेषज्ञ बनकर समाज और राष्ट्र के लिए हितकारी होते थे, जो अपनी शैक्षणिक अभियोग्यताओं से तो देश के काम आते ही थे, साथ ही वे अच्छे नागरिक भी थे. अपनी उच्छृंखलताओं से प्रशासन के लिए चिंता का विषय नहीं बनते थे. अर्वाचीन गुरुकुल परम्परा में भी इसी आदर्श को दोहराने की कोशिश की जाती है. दिनचर्या का एक निर्धारित क्रम इन गुणों के विकास में सहयोग प्रदान करता है-

04:00 से 04:15	**-प्रातः जागरण एवं प्रार्थना**	**02:00 से 04:00**	**-विद्यालय**
04:15 से 04:45	**-शौच एवं दन्तधावन**	**04:00 से 04:30**	**-शुद्धि**
04:45 से 05:30	**-स्वाध्याय**	**04:30 से 05:30**	**-शारीरिक परिश्रम**
05:30 से 06:00	**-व्यायाम**	**05:30 से 06:15**	**-व्यायाम**
06:00 से 06:30	**-परिवेश शुद्धि व शारीरिकश्रम**	**06:15 से 06:45**	**-स्नान**
06:00 से 07:00	**-स्नान**	**06: 45 से 07:30**	**-ब्रह्मयज्ञ एवं स्वाध्याय**
07:00 से 08:00	**-ब्रह्मयज्ञादि**	**07:30 से 08:00**	**-भोजन**
08:00 से 08:30	**-प्रातः:राश**	**08:00 से 08:15**	**-भ्रमण**
08:30 से 12:30	**-विद्यालय**	**08:15 से 09:00**	**-स्वाध्याय**
12:30 से 02:00	**-भोजन एवं विश्राम**	**09:00 से 04:00**	**-शयन**

यह नियमित दिनचर्या बच्चों में अनुशासन का भाव पैदा करती है. उन्हें विनम्र बनाती है तथा समूह का हिस्सा बनाना सिखाती है. बच्चों में स्वावलम्बन की अत्यन्त आवश्यक भावना का विकास करने के लिए गुरुकुल का यह विशेष नियम है कि बच्चे अपने निजी कार्य जैसे- वस्त्रप्रक्षालन, पात्रशोधन एवं परिसर शोधन का कार्य स्वयं करें। इससे वे न सिर्फ स्वावलम्बी एवं व्यावहारिक बनेंगे, बल्कि अपने किए परिश्रम की कीमत भी पहचानेंगे. इससे वे दूसरे की मेहनत का भी सम्मान करना सीखेंगे. उनमें राष्ट्रीय संसाधनों के प्रति किफायत का भाव पैदा होगा और वे स्वच्छताप्रिय बनेंगे।

नोट : दिनचर्या में आवश्यकता एवं ऋतु अनुकूल सामान्य परिवर्तन किया जा सकता है।